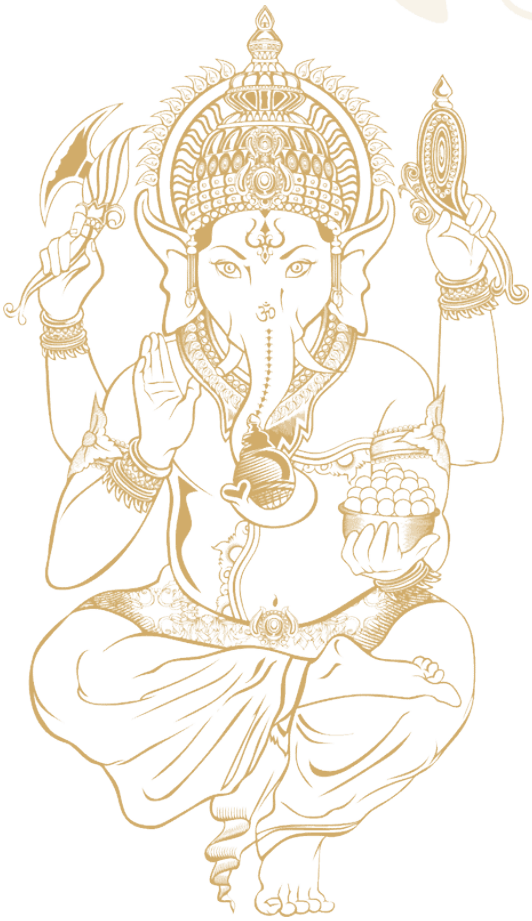

Amit Oberoi Nangloi

10 Feb 1990

09:45 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119462101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**10/02/1990**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**21:45:00 घंटे**
इष्ट	36:42:25 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	21:23:52 घंटे
वेलान्तर	-00:14:17 घंटे
साम्पातिक काल	06:45:46 घंटे
सूर्योदय	07:04:01 घंटे
सूर्यास्त	18:07:03 घंटे
दिनमान	11:03:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	27:56:43 मकर
लग्न के अंश	16:21:22 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**मघा - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	शोभन
करण	कौलव
गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मू-मुकेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1911	माघ	21
पंजाबी	संवत : 2046	माघ	28
बंगाली	सन् : 1396	माघ	27
तमिल	संवत : 2046	थई	28
केरल	कोल्लम : 1165	मकरम	28
नेपाली	संवत : 2046	माघ	28
चैत्रादि	संवत : 2046	फाल्गुन	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2046	माघ	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 24:46:06
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 30:51:45 घंटे
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय कालीन योग ____: शोभन
योग समाप्ति काल _____: 22:12:59 घंटे
जन्म योग _____: शोभन
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 12:41:58 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 39:01:02
भभोग _____: 61:47:54
भोग्य दशा काल _____: केतु 2 वर्ष 6 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

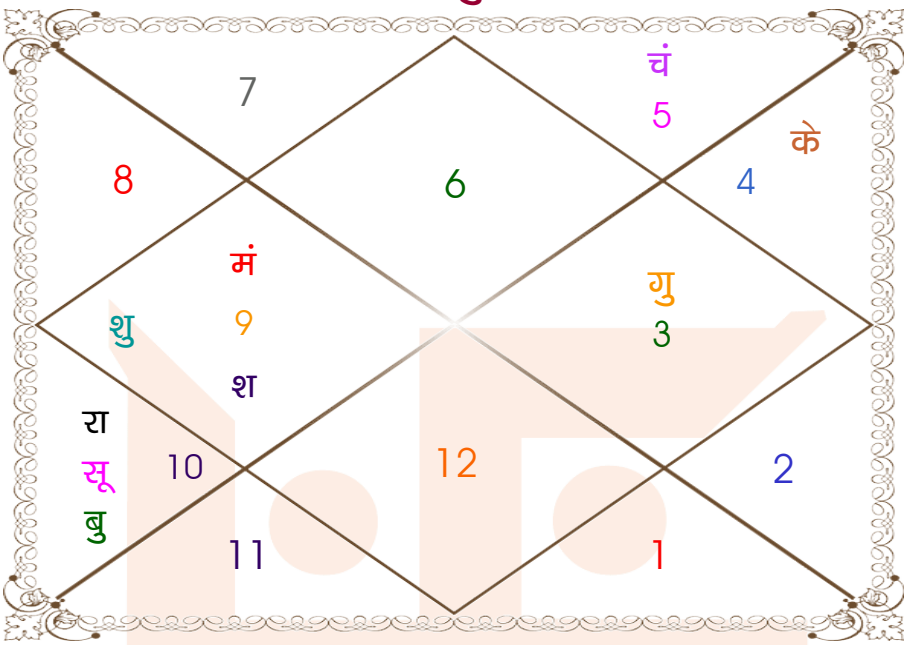

चन्द्र कुंडली

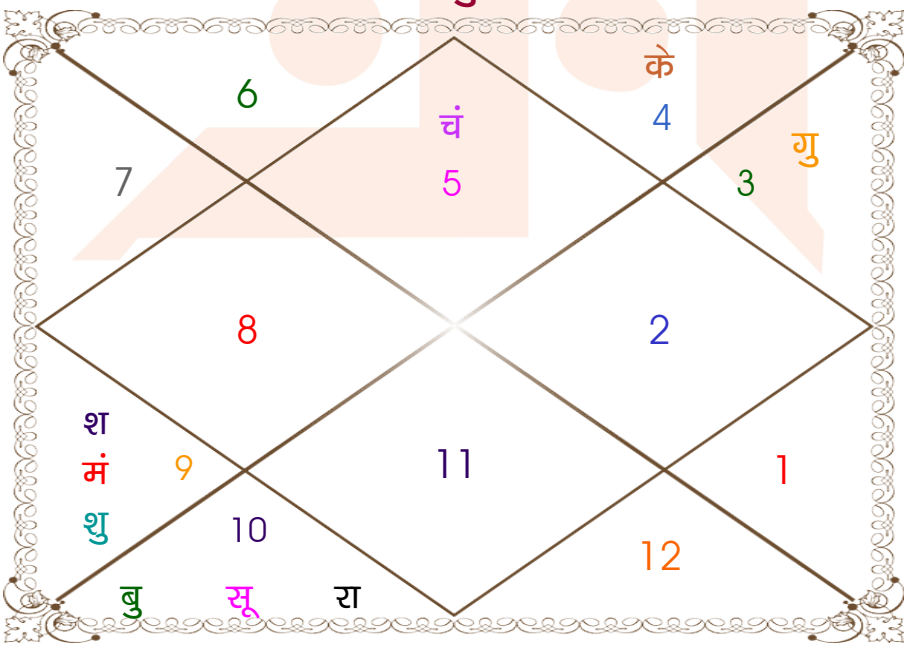

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

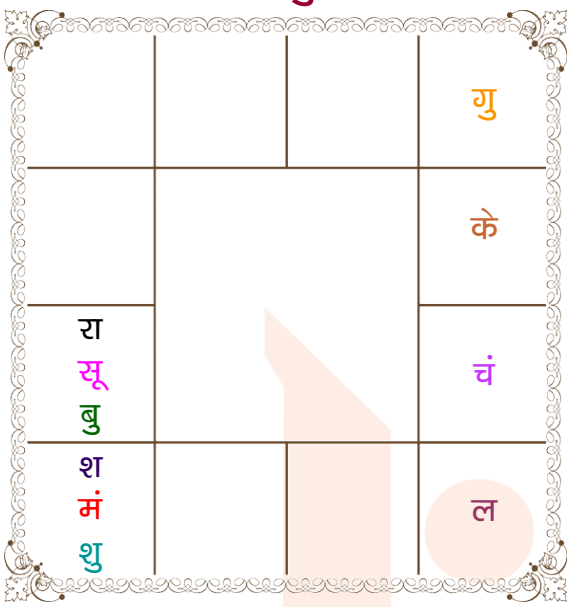

लग्न कुंडली

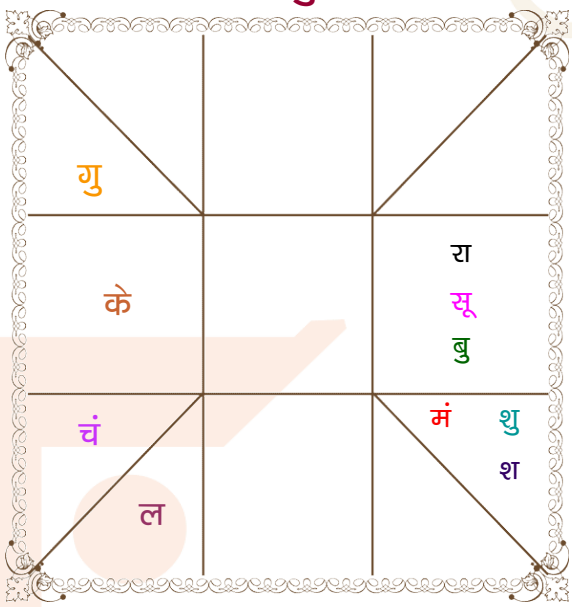

विंशोत्तरी
केतु 2वर्ष 6मा 23दि

केतु

10/02/1990

05/09/2105

केतु	04/09/1992
शुक्र	04/09/2012
सूर्य	04/09/2018
चन्द्र	04/09/2028
मंगल	04/09/2035
राहु	04/09/2053
गुरु	04/09/2069
शनि	04/09/2088
बुध	05/09/2105

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 9मा 29दि

भद्रिका

11/12/2022

11/12/2027

भद्रिका	22/08/2023
उल्का	21/06/2024
सिद्धा	11/06/2025
संकटा	22/07/2026
मंगला	11/09/2026
पिंगला	21/12/2026
धान्या	22/05/2027
भ्रामरी	11/12/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	16:21:22	317:17:00	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	---
सूर्य			मक	27:56:43	01:00:41	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	08:27:03	12:54:34	मघा	3	10	सूर्य	केतु	गुरु	मित्र राशि
मंगल			धनु	15:01:05	00:43:35	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
बुध			मक	04:26:51	01:19:06	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	सम राशि
गुरु	व		मिथु	07:25:03	00:02:48	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			धनु	27:18:12	00:05:28	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	सम राशि
शनि			धनु	26:33:48	00:06:25	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	सम राशि
राहु	व		मक	22:46:13	00:00:24	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	22:46:13	00:00:24	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	चंद्र	मित्र राशि
हर्ष			धनु	14:17:10	00:02:51	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
नेप			धनु	19:45:13	00:01:53	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	24:02:35	00:00:19	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
दशम भाव			मिथु	16:48:05	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:21

लग्न-चलित

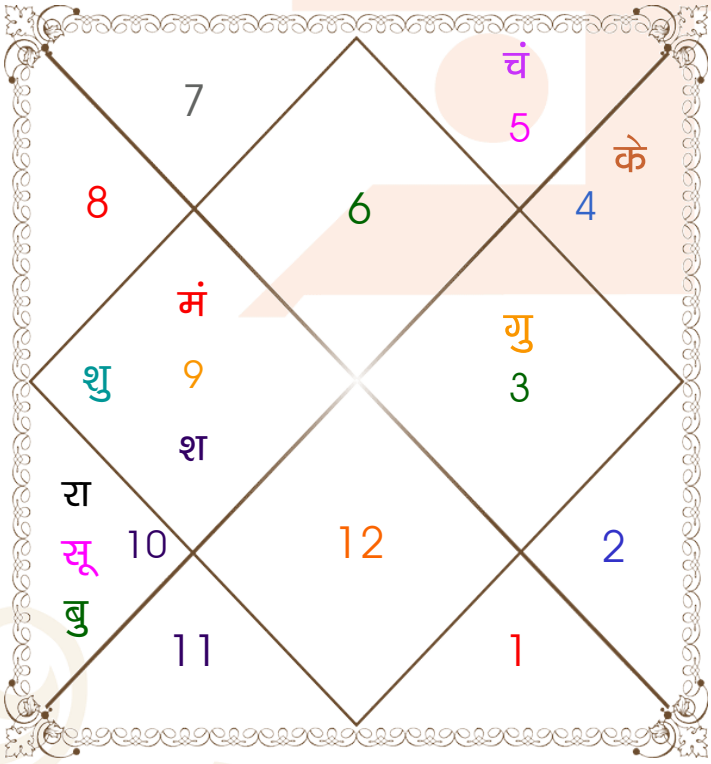

चन्द्र कुंडली

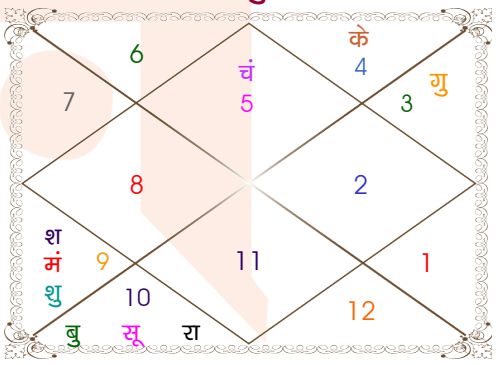

नवमांश कुंडली

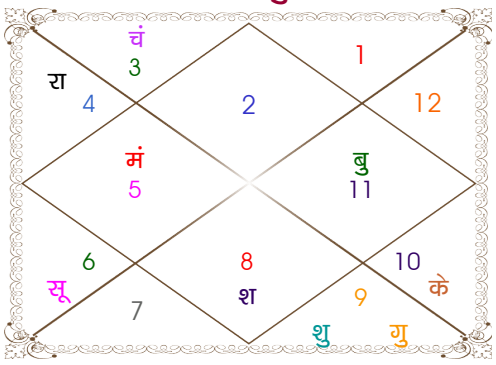

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	01:25:49	कन्या	16:21:22
2	तुला	01:25:49	तुला	16:30:16
3	वृश्चिक	01:34:43	वृश्चिक	16:39:11
4	धनु	01:43:38	धनु	16:48:05
5	मकर	01:43:38	मकर	16:39:11
6	कुम्भ	01:34:43	कुम्भ	16:30:16
7	मीन	01:25:49	मीन	16:21:22
8	मेष	01:25:49	मेष	16:30:16
9	वृष	01:34:43	वृष	16:39:11
10	मिथुन	01:43:38	मिथुन	16:48:05
11	कर्क	01:43:38	कर्क	16:39:11
12	सिंह	01:34:43	सिंह	16:30:16

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	16:21:22
2	तुला	14:45:12
3	वृश्चिक	15:13:33
4	धनु	16:48:05
5	मकर	18:29:37
6	कुम्भ	18:52:05
7	मीन	16:21:22
8	मेष	14:45:12
9	वृष	15:13:33
10	मिथुन	16:48:05
11	कर्क	18:29:37
12	सिंह	18:52:05

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

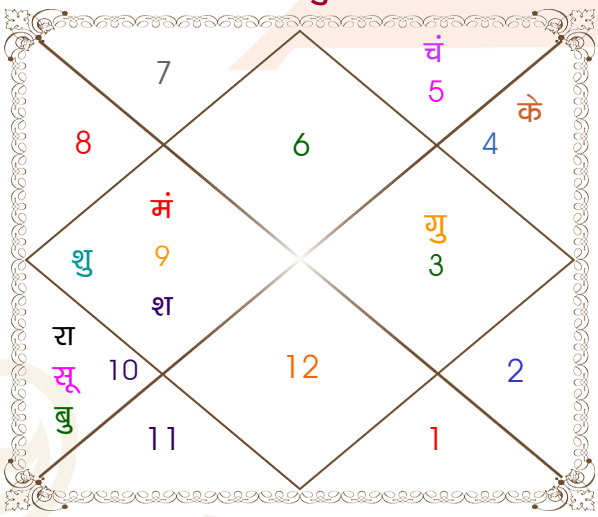

भाव कुंडली

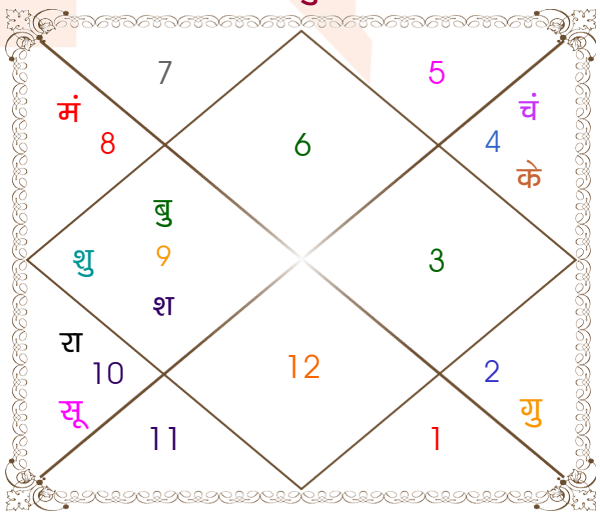

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 2 वर्ष 6 मास 23 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
10/02/1990		04/09/1992		04/09/2012		04/09/2018		04/09/2028	
04/09/1992		04/09/2012		04/09/2018		04/09/2028		04/09/2035	
	00/00/0000	शुक्र	04/01/1996	सूर्य	22/12/2012	चंद्र	06/07/2019	मंगल	31/01/2029
	00/00/0000	सूर्य	03/01/1997	चंद्र	23/06/2013	मंगल	04/02/2020	राहु	18/02/2030
	00/00/0000	चंद्र	04/09/1998	मंगल	29/10/2013	राहु	04/08/2021	गुरु	25/01/2031
	00/00/0000	मंगल	04/11/1999	राहु	22/09/2014	गुरु	04/12/2022	शनि	05/03/2032
	00/00/0000	राहु	04/11/2002	गुरु	12/07/2015	शनि	05/07/2024	बुध	02/03/2033
	10/02/1990	गुरु	05/07/2005	शनि	23/06/2016	बुध	04/12/2025	केतु	29/07/2033
गुरु	30/07/1990	शनि	04/09/2008	बुध	29/04/2017	केतु	05/07/2026	शुक्र	28/09/2034
शनि	07/09/1991	बुध	06/07/2011	केतु	04/09/2017	शुक्र	05/03/2028	सूर्य	03/02/2035
बुध	04/09/1992	केतु	04/09/2012	शुक्र	04/09/2018	सूर्य	04/09/2028	चंद्र	04/09/2035

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
04/09/2035		04/09/2053		04/09/2069		04/09/2088		05/09/2105	
04/09/2053		04/09/2069		04/09/2088		05/09/2105		00/00/0000	
राहु	18/05/2038	गुरु	23/10/2055	शनि	07/09/2072	बुध	31/01/2091	केतु	01/02/2106
गुरु	10/10/2040	शनि	05/05/2058	बुध	18/05/2075	केतु	28/01/2092	शुक्र	03/04/2107
शनि	17/08/2043	बुध	10/08/2060	केतु	26/06/2076	शुक्र	28/11/2094	सूर्य	09/08/2107
बुध	06/03/2046	केतु	17/07/2061	शुक्र	26/08/2079	सूर्य	05/10/2095	चंद्र	09/03/2108
केतु	24/03/2047	शुक्र	17/03/2064	सूर्य	07/08/2080	चंद्र	05/03/2097	मंगल	05/08/2108
शुक्र	24/03/2050	सूर्य	03/01/2065	चंद्र	09/03/2082	मंगल	02/03/2098	राहु	24/08/2109
सूर्य	16/02/2051	चंद्र	05/05/2066	मंगल	17/04/2083	राहु	20/09/2100	गुरु	11/02/2110
चंद्र	16/08/2052	मंगल	11/04/2067	राहु	21/02/2086	गुरु	27/12/2102		00/00/0000
मंगल	04/09/2053	राहु	04/09/2069	गुरु	04/09/2088	शनि	05/09/2105		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 6 मा 29 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
05/07/2024		04/12/2025		05/07/2026		05/03/2028		04/09/2028	
04/12/2025		05/07/2026		05/03/2028		04/09/2028		31/01/2029	
बुध	16/09/2024	केतु	17/12/2025	शुक्र	15/10/2026	सूर्य	14/03/2028	मंगल	12/09/2028
केतु	16/10/2024	शुक्र	21/01/2026	सूर्य	14/11/2026	चंद्र	29/03/2028	राहु	05/10/2028
शुक्र	10/01/2025	सूर्य	01/02/2026	चंद्र	04/01/2027	मंगल	09/04/2028	गुरु	25/10/2028
सूर्य	05/02/2025	चंद्र	19/02/2026	मंगल	08/02/2027	राहु	06/05/2028	शनि	17/11/2028
चंद्र	20/03/2025	मंगल	03/03/2026	राहु	11/05/2027	गुरु	31/05/2028	बुध	08/12/2028
मंगल	20/04/2025	राहु	04/04/2026	गुरु	31/07/2027	शनि	29/06/2028	केतु	17/12/2028
राहु	06/07/2025	गुरु	02/05/2026	शनि	04/11/2027	बुध	25/07/2028	शुक्र	11/01/2029
गुरु	13/09/2025	शनि	05/06/2026	बुध	30/01/2028	केतु	04/08/2028	सूर्य	18/01/2029
शनि	04/12/2025	बुध	05/07/2026	केतु	05/03/2028	शुक्र	04/09/2028	चंद्र	31/01/2029

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
31/01/2029		18/02/2030		25/01/2031		05/03/2032		02/03/2033	
18/02/2030		25/01/2031		05/03/2032		02/03/2033		29/07/2033	
राहु	29/03/2029	गुरु	05/04/2030	शनि	30/03/2031	बुध	25/04/2032	केतु	11/03/2033
गुरु	19/05/2029	शनि	29/05/2030	बुध	27/05/2031	केतु	16/05/2032	शुक्र	05/04/2033
शनि	19/07/2029	बुध	16/07/2030	केतु	19/06/2031	शुक्र	16/07/2032	सूर्य	12/04/2033
बुध	12/09/2029	केतु	05/08/2030	शुक्र	26/08/2031	सूर्य	03/08/2032	चंद्र	25/04/2033
केतु	04/10/2029	शुक्र	01/10/2030	सूर्य	15/09/2031	चंद्र	02/09/2032	मंगल	03/05/2033
शुक्र	07/12/2029	सूर्य	18/10/2030	चंद्र	19/10/2031	मंगल	23/09/2032	राहु	26/05/2033
सूर्य	26/12/2029	चंद्र	15/11/2030	मंगल	11/11/2031	राहु	17/11/2032	गुरु	15/06/2033
चंद्र	27/01/2030	मंगल	05/12/2030	राहु	11/01/2032	गुरु	04/01/2033	शनि	08/07/2033
मंगल	18/02/2030	राहु	25/01/2031	गुरु	05/03/2032	शनि	02/03/2033	बुध	29/07/2033

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
29/07/2033		28/09/2034		03/02/2035		04/09/2035		18/05/2038	
28/09/2034		03/02/2035		04/09/2035		18/05/2038		10/10/2040	
शुक्र	08/10/2033	सूर्य	05/10/2034	चंद्र	21/02/2035	राहु	30/01/2036	गुरु	11/09/2038
सूर्य	30/10/2033	चंद्र	16/10/2034	मंगल	06/03/2035	गुरु	10/06/2036	शनि	28/01/2039
चंद्र	04/12/2033	मंगल	23/10/2034	राहु	06/04/2035	शनि	13/11/2036	बुध	01/06/2039
मंगल	29/12/2033	राहु	11/11/2034	गुरु	05/05/2035	बुध	02/04/2037	केतु	23/07/2039
राहु	03/03/2034	गुरु	28/11/2034	शनि	08/06/2035	केतु	29/05/2037	शुक्र	16/12/2039
गुरु	29/04/2034	शनि	18/12/2034	बुध	08/07/2035	शुक्र	10/11/2037	सूर्य	28/01/2040
शनि	05/07/2034	बुध	06/01/2035	केतु	20/07/2035	सूर्य	29/12/2037	चंद्र	11/04/2040
बुध	04/09/2034	केतु	13/01/2035	शुक्र	25/08/2035	चंद्र	21/03/2038	मंगल	01/06/2040
केतु	28/09/2034	शुक्र	03/02/2035	सूर्य	04/09/2035	मंगल	18/05/2038	राहु	10/10/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	97%	सुख, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	75%	सन्तति सुख, सुख
नीलम	शनि	73%	सुख, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	55%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	41%	व्यय, हानि
लहसुनिया	केतु	34%	हानि, व्यय
माणिक्य	सूर्य	25%	सन्तति कष्ट, व्यय
मूंगा	मंगल	3%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, पराक्रम हानि

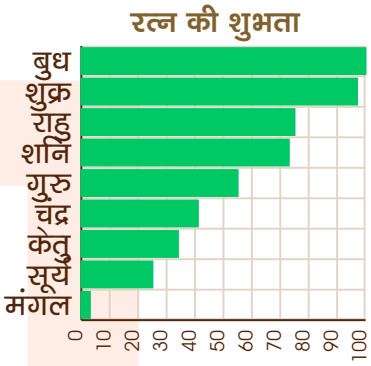

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	04/09/1992	0%	16%	16%	100%	55%	100%	61%	62%	55%
शुक्र	04/09/2012	0%	16%	3%	100%	55%	100%	80%	81%	47%
सूर्य	04/09/2018	50%	52%	16%	100%	61%	84%	61%	62%	9%
चंद्र	04/09/2028	38%	58%	3%	100%	55%	97%	73%	62%	9%
मंगल	04/09/2035	38%	52%	28%	100%	61%	97%	73%	62%	47%
राहु	04/09/2053	0%	16%	0%	100%	55%	100%	80%	88%	9%
गुरु	04/09/2069	38%	52%	16%	100%	67%	84%	73%	75%	34%
शनि	04/09/2088	0%	16%	0%	100%	55%	100%	86%	81%	9%
बुध	05/09/2105	38%	16%	3%	100%	55%	100%	73%	75%	34%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा ।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को थोड़ा विलम्ब से सन्तान प्राप्त होती है या फिर उसके होने में आंशिक रूप में व्यवधान उपस्थित होता है और जातक को पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। ऐसे जातक को सन्तान सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है और अक्सर सन्तान से दूर रहता है। जातक को वंश वृद्धि के लिए थोड़ी बहुत चिन्ता बनी रहती है। विद्याध्ययन में आंशिक रूप से रूकावट आती हैं। पर कालान्तर में व्यवधान स्वतः समाप्त हो जाता है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी किसी भी समय कष्टमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से जातक को अपयश मिलता है। घर की सुख-शान्ति में थोड़ा अभाव रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं। वे समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जातक के शत्रु षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इस योग के प्रभाव से लाभ मार्ग में आंशिक रूप से बाधा, चिन्ता एवं कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है।

इसके प्रभाव से जातक को गुप्त रोग व्याधि कभी घेर लेती है। जिसमें धन अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक वृद्धावस्था को लेकर थोड़ा बहुत चिन्तित रहता है। कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक को राजनीति में बहुत सफलता मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(04/09/2018 - 04/09/2028)

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 04/09/2018 को आरंभ और 04/09/2028 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देख भाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्द्रपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(05/07/2024 - 04/12/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 04/09/2018 को प्रारंभ हुई थी और 04/09/2028 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 05/07/2024 को प्रारंभ होकर 04/12/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध पत्रिका के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और एकादश के कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। पठन-पाठन में रुचि रहेगी। बुद्धि बलवती होगी। मंत्र शास्त्र भी पढ़ेंगे। किसी के सलाहकार भी बन सकते हैं।

वासनाओं में वृद्धि संभव है। सावधानी बरतना आवश्यक है। ऊर्जा के सकारात्मक प्रयोग के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(04/12/2025 - 05/07/2026)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 04/09/2018 को प्रारंभ हुई ओर 04/09/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 04/12/2025 को प्रारंभ होकर 05/07/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि द्वारा प्रभाव डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। बुद्धिमत्ता बढ़ेगी। बहुत से स्थानों की आरामदायक यात्राएं होंगी। सट्टेबाजी, लॉटरी, घुड़दौड़, शेयर, सामान की जमाखोरी द्वारा धम कमा सकते हैं। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे। दयालुता और अन्य सुगुणों में वृद्धि होगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(05/07/2026 - 05/03/2028)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 04/09/2018 को प्रारंभ होकर 04/09/2028को समाप्त होगी।

महादशा :- मंगल
(04/09/2028 - 04/09/2035)

मंगल की महादशा 04/09/2028 को आरम्भ और 04/09/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित हैं। दशम, एकादश तथा सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। सप्तमेश चन्द्र के फलस्वरूप आपको साझेदारी में लाभ हुआ होगा, यात्रा और सुखों की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सुख और अधिक परिश्रम किए बगैर धन

की प्राप्ति होगी, माता से लाभ मिलेगा और जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको जीवन शक्ति, उत्साह और बल प्राप्त होगा। आपको ताप सम्बन्धी बीमारियाँ, बुखार, सरदर्द, संक्रामक रोग या हृदय गति में हल्की गड़बड़ी हो सकती है। इन मामूली पीड़ाओं को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अति उत्तम होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर लाभ मिलेगा। जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ की सम्भावना भी है। आपकी व्यावसायिक कमाई अच्छी होगी। अपनी जीविका के लिए यान्त्रिक तथा अभियन्त्रण, सैन्य सेवा, सर्जन या दन्त चिकित्सक का कार्य या किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, खेल के सामान, दवा, धातु, मशीन अथवा जमीन-जायदाद से सम्बद्ध व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। नौकरीपेशा लोगों की पदान्नति और आय में वृद्धि होगी तथा कार्य-स्थान में वातावरण अनुकूल होगा। आपका चहुमुखी विकास होगा। नौकरी के लिये यह काल अति उत्तम होगा। आपको यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ होगा। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। हर प्रकार के लाभ, ख्याति, प्रतिष्ठा तथा उन्नति के लिये यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको अति सुन्दर वाहन की प्राप्ति होगी। आपको सम्पत्ति, मकान और जमीन की प्राप्ति होगी। चल-अचल सम्पत्ति के लिये यह दशा अति उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी पसन्द के अनुसार विषयों व और संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। आपका झुकाव गणित, वाणित्य, अभियंत्रण, भूगर्भ या सैन्य शिक्षा की ओर हो सकता है। आप अपने हर कार्य में सफल होंगे और सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। आप अपने नेतृत्व-गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपके सम्बन्ध उत्तम रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख तथा लाभ प्राप्त होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण दाम्पत्य जीवन में कुछ गड़बड़ी हो सकती है। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ, लाभदायक परिवर्तन और लाभ हो सकता है। आपके पिता को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ तथा उद्यम में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर तरह लाभ, चहुमुखी समृद्धि तथा धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य और ननिहाल से लाभ मिलेगा।

उनके साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्र आपकी बहुत मदद करेंगे। इस दशा में आपको बगैर अधिक प्रयास के सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको सफलता, यश, श्याति तथा हर प्रकार के लाभ की प्राप्ति होगी। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा हो सकती है जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। बुध के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ मामूली समस्याएँ आएंगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। केतु आपके लिये कुछ मानसिक समस्याएँ उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप जीवन में उन्नति और बच्चों से सुख मिलेगा सूर्य की अन्तर दशा के कारण परिवर्तन होगा हौर आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप साझेदारों से लाभ प्राप्त होगा तथा विवाह और यात्रा होगी।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(04/09/2028 - 31/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 04/09/2028 को प्रारंभ होकर 31/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद या उत्तम वाहन प्राप्त कर सकते हैं। माता के साथ संबंध मधुर होंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। आप सफल और ऊर्जावान होंगे। आपके लक्ष्य सकारात्मक होंगे। उन्हें प्राप्त करने के लिए आप सारी शक्ति लगा देंगे। साझेदार से सावधान रहें। आपके जीवनसाथी सक्रिय रहेंगे, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके पिता के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है; वे जायदाद क्रय कर सकते हैं। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सम्मानित होंगी और सुखपूर्वक जीवनयापन करेंगी।

आपके भाई-बहन शत्रुओं पर विजयी होंगे, उनके मातहत सहयोग करेंगे। आपकी संतान को सफलता पाने के लिए परिश्रम करना होगा। उन्हें फालतू कार्यों में समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी; प्रोन्नति हो सकती है। परामर्शदाता धन कमाएंगे; कुछ यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों को साझे के कार्यों से लाभ हो सकता है।

सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों और उच्च रक्तचाप से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए लाल वस्त्र, तांबा, लाल चप्पल दान में दें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(31/01/2029 - 18/02/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 04/09/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 31/01/2029 को प्रारंभ होकर 18/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं और मुसीबतों से मुक्त होंगे। संतान सुखकारी रहेगी। सट्टेबाजी में अचानक धन प्राप्त हो सकता है। कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है, सर्जनात्मक प्रतिभा का विकास होगा। खेलकूद आदि में रुचि होगी। धनागम होगा और सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता को धन या अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। उनका

स्वास्थ्य उत्तम होगा, वे साहसी और धनी बनेंगे। उनका विवाह हो सकता है, समाज में सफल रहेंगे।

आपकी संतान अपने कार्यों में उत्कृष्टता हासिल करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यों में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं के लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी धन कमाएंगे; उन्हें विदेश से लाभ हो सकता है।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले कपड़े, उड़द की दाल दान करें।